

जून 2020

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

द वर्ल्ड इज द पज़ल इटसेल्फ़।

देयर आर टू व्यू पोइन्टस

टु सॉल्व दिस पज़ल।

बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट यू आर चंदूलाल

एन्ड बाइ रियल व्यू पोइन्ट

आप 'शुद्धात्मा' हो।

इन दो व्यू पोइन्टस से जगत् को देखोगे तो

सभी पज़ल सॉल्व हो जाएँगे।



अड्डालज : PMHT अनॉलाइन शिविर



अड्डालज : पून्यश्री के 68वाँ जन्मदिन का अनॉलाइन महोत्सव

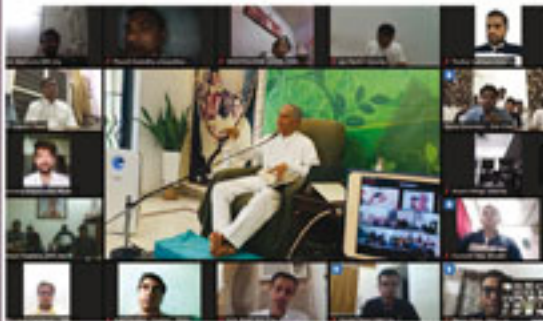


बर्ध डे केक कटिंग करते हुए पून्यश्री

स्वामी को प्रसाद खिलाते हुए पून्यश्री

महात्मारों के आशीर्वाद लेते हुए पून्यश्री

अड्डालज : अविवाहित भाइयोंकी अनॉलाइन शिविर



अड्डालज: अविवाहित बहनों की अनॉलाइन शिविर



अड्डालज : अनॉलाइन ज्ञानविधि



वर्ष : 15 अंक : 8
अखंड क्रमांक : 176
जून 2020
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2020

Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by

**Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at

Amba Offset

B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिार, सीमंधरसिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल

भारत : 1500 रुपये

यू.एस.ए. : 150 डॉलर

यू.के. : 120 पाउंड

वार्षिक

भारत : 150 रुपये

यू.एस.ए. : 15 डॉलर

यू.के. : 12 पाउंड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानीकृपा से 'शुद्धात्मा' लक्ष की प्राप्ति

संपादकीय

अनंत काल से अनंत लक्ष्य भेद दिए, किन्तु 'खुद कौन है', वही लक्ष्य नहीं साधा। सही मार्ग ही 'मैं कौन हूँ' की खोज का है। अनादि से जो दृष्टि विनाशी वस्तुओं की तरफ ही रही, उसे 'ज्ञानी पुरुष' जब खुद के अविनाशी स्वरूप की तरफ मोड़ देते हैं, तब फिर वह कभी भी वहाँ से हटती नहीं है! ज्ञानी की दिव्यातिदिव्य देन है कि वे ऐसी दिव्य दृष्टि देते हैं जो खुद के और सामने वाले के आत्म स्वरूप को ही देखती है।

आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद ज्यादा से ज्यादा ज्ञान और ज्ञानी के परिचय में रहने से महात्माओं को आत्मा का लक्ष (जागृति) रहता है, फिर भी कभी-कभी संयोगों के दबाव की वजह से तन्मयाकार हो जाते हैं, तब यों लगता है कि सारा ज्ञान चला गया लेकिन ऐसा नहीं होता। उस समय आत्मा का लक्ष हट जाता है लेकिन प्रतीति का तार तो निरंतर जाइन्ट ही होता है। अतः तुरंत ही अपने आप, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह लक्ष वापस आ जाता है। इसे क्षायक समकित कहा गया है। अतः अक्रम ज्ञान मिलने के बाद महात्मा अनुभव, लक्ष और प्रतीति - इन तीन सीढ़ियों में ही रहा करते हैं, चौथे (स्टेप) में जाते ही नहीं हैं, इसे क्षायक समकित कहते हैं, यही परमार्थ समकित है।

'वर्ते निज स्वभावनुं, अनुभव-लक्ष-प्रतीति, वृत्ति वहे निजभावमां, परमाथें समकित।' अज्ञान दशा में जो वृत्तियाँ बाहर भटकती थीं, वे निज स्वभाव के अनुभव, लक्ष व प्रतीति में बरतने के बाद तुरंत ही वापस अपने आप अंदर मुड़ जाती है। अब, नया कुछ नहीं करना है। मूल आत्मा की जो प्रतीति बैठ गई है, उसे पूर्ण करना है। उसके लिए दादा द्वारा दी गई पाँच आज्ञाओं का पालन करके, शुद्धात्मा के लक्ष से आगे, अनुभव की श्रेणियाँ चढ़नी हैं।

आत्मा का अनुभव होने के बाद अंदर चेताने वाला जागृत हो जाता है। वह प्रतिक्षण खुद की भूल दिखाता है और प्रतिक्रमण करवाता है। अब, अनुभव ज्ञान कब प्रकट होगा? जब पिछले कड़वे-मीठे संयोगों के फल आएँ, तब सामने वाला निर्दोष दिखाई दे और प्रतिक्षण खुद की भूलें दिखाई दें। आत्मा के अनुभव की कक्षा के लक्षण क्या हैं? जब संसार की किसी भी बात का हम पर असर न हो तब पूर्णाहुति। यानी कि जैसे-जैसे हर एक संयोग में समता रहने लगती है, वीतरागता रहती है, वैसे-वैसे आत्मा का अनुभव प्रकट होता है। फिर वर्तन में आता है उसके बाद पूर्ण शुद्धात्मा पद प्राप्त होता है।

आत्मा की अनुभव दशा को प्राप्त करने के लिए पाँच आज्ञा के साथ-साथ विधि-वांचन-सामायिक और सत्संग का भी उतना ही माहात्म्य है जिनके आधार पर महात्माओं की जागृति बढ़ती है। अब, आज्ञा रूपी पुरुषार्थ करके, इस जन्म में शुद्धात्मा अनुभव की श्रेणियों में आगे बढ़ें, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

ज्ञानीकृपा से 'शुद्धात्मा' लक्ष की प्राप्ति

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

वर्ल्ड के पज़ल का एक मात्र सॉल्यूशन

जीवन का लक्ष्य क्या है?

'मैं खुद कौन हूँ' यही ढूँढने का लक्ष्य होना चाहिए, अन्य कोई लक्ष्य नहीं होना चाहिए।

यदि 'मैं कौन हूँ' की खोज कर रहे हों तो वह सही रास्ता है अथवा फिर जो लोग इस खोज में पड़े हुए हैं और औरों को भी 'यही' खोजना सिखा रहे हों, तो वे विचार सही रास्ते पर हैं, ऐसा कहा जाएगा। बाकी, सब तो जाना हुआ ही है न? और जानकर वापस छोड़ना ही है न? कितने ही जन्मों से जानने के ही प्रयत्न किए हैं, लेकिन जो जानना है, वही नहीं जाना।

'खुद आत्मा है', ऐसी प्रतीति खुद को हो जाए और 'मैं चंदूलाल हूँ', वह बात गलत निकली, जब ऐसा अनुभव हो, तब जानना कि अज्ञान गया।

प्रश्नकर्ता : 'आत्मानुभव हुआ है', ऐसा कब कहा जा सकता है?

दादाश्री : ज्ञानियों ने आत्मा का अनुभव किसे कहा है? कल तक जो दिखता था, वह खत्म हो गया और नई तरह का दिखने लगा। अनंत जन्मों से भटक रहे थे, और जो 'रिलेटिव' दिख रहा था वह गया और नई ही तरह का 'रियल' दिखना शुरू हो गया, यही आत्मा का अनुभव

है! दृश्य को अदृश्य किया और अदृश्य था, वह दृश्य हो गया!!

द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ। देयर आर टू व्यू पोइन्ट्स टु सॉल्व दिस पज़ल। वन रिलेटिव व्यू पोइन्ट एन्ड वन रियल व्यू पोइन्ट। बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट यू आर चंदूलाल एन्ड बाइ रियल व्यू पोइन्ट आप 'शुद्धात्मा' हो। (जगत् स्वयं ही पहेली (पज़ल) है। यह पहेली दो दृष्टि बिंदुओं से सुलझा सकते हैं। एक रिलेटिव व्यू पोइन्ट और एक रियल व्यू पोइन्ट। रिलेटिव दृष्टि बिंदु से आप चंदूलाल और रियल दृष्टि बिंदु से आप शुद्धात्मा हो।) इन दो व्यू पोइन्ट्स से जगत् को देखोगे तो सारे ही पज़ल सॉल्व हो जाएँगे। ये ही दिव्यचक्षु हैं।

अहंकार अंधा और ऊपर से चश्मा

प्रश्नकर्ता : रिलेटिव व्यू पोइन्ट से 'आइ', चंदूभाई है और रियल व्यू पोइन्ट से 'आइ', शुद्धात्मा है, तो वह 'आइ' एक ही है? इन दोनों में 'आइ' है?

दादाश्री : 'मैं' शुद्धात्मा तो हूँ ही। फिर 'उसे' भ्रांति हो गई कि यह गाड़ी चल रही है या मैं चल रहा हूँ? यानी कि उसे ऐसा लगा कि मैं चल रहा हूँ। इसलिए फिर 'मैं' में से हो गया अहंकार कि 'मैं चंदू भाई, मैं मगन भाई।' फिर अहंकार को अंधा बनाया। उसे चश्मे पहनाता है,

पास्ट (पूर्व) कर्म के हिसाब से। इसलिए फिर वापस सब अंधेपन से ही देखता है कि 'मेरी वाइफ ने ही दगा दिया है।' ऐसा दिखाता है।

प्रश्नकर्ता : चश्मे की वजह से ही ऐसा दिखाई देता है ?

दादाश्री : हाँ। वास्तव में ऐसा है नहीं लेकिन उसे चश्मे की वजह से ऐसा दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : 'वह यह कर रहा है, इसी ने किया है', यह सब चश्मे की वजह से दिखाई देता है ?

दादाश्री : चश्मे की वजह से दिखाई देता है। उसी प्रकार से अहंकार को चश्मे होते हैं इसीलिए सभी, 'खराब है, अच्छा है और फलाना है', ऐसा दिखाई देता है।

'मैं' को मूल जगह पर लाना है

'मैं चंदूभाई हूँ' यह अहंकार है। क्योंकि जहाँ 'मैं' नहीं, वहाँ 'मैं' का आरोपण करना, उसी को अहंकार कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : 'मैं चंदूभाई हूँ' कहने में अहंकार कहाँ आया? 'मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ' ऐसा करे तो अलग बात है, लेकिन सहज रूप से कहें, उसमें अहंकार कहाँ आया ?

दादाश्री : सहज भाव से बोले, तब भी क्या अहंकार चला जाता है? 'मेरा नाम चंदूभाई है' ऐसा सहज बोलने पर भी वह अहंकार ही है। क्योंकि आप 'जो हो', वह जानते नहीं हो और 'जो नहीं हो', उसका आरोपण करते हो, वह सब अहंकार ही है न!

'आप चंदूभाई हो' वह ड्रामेटिक चीज़ है। अर्थात् 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा बोलने में हर्ज़ नहीं

है लेकिन 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसी बिलीफ नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वर्ना 'मैं' पद आ गया।

दादाश्री : 'मैं', 'मैं' की जगह पर बैठे तो अहंकार नहीं है। 'मैं' मूल जगह पर नहीं है, आरोपित जगह पर है। इसलिए अहंकार है। 'मैं' आरोपित जगह से हट जाए और मूल जगह पर बैठ जाए तो अहंकार चला जाएगा। अर्थात् 'मैं' को निकालना नहीं है, 'मैं' को उसके एक्ज़ेक्ट प्लेस (यथार्थ स्थान) पर रखना है।

'मैं' को लक्ष बैठा शुद्धात्मा का

प्रश्नकर्ता : उस 'मैं' के बारे में ज़रा और बताइए न!

दादाश्री : 'मैं' तो एवरीव्हेर एडजस्टेबल है कि 'मैं' तो जमाई हूँ, कहे तो वह जमाई भी बनता है। 'ससुर हूँ' कहे तो वैसा बन जाता है और 'मैं' शुद्धात्मा हूँ कहे तो शुद्धात्मा बन जाता है और 'मैं' पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) हूँ कहे तो पुद्गल बन जाता है।

'मैं' तो एवरीव्हेर एडजस्टेबल है, कितनी अच्छी चीज़ है! देखो न, 'मैं' अभी चंदूभाई था और दो घंटे बाद 'मैं' शुद्धात्मा बन गया। वही का वही 'मैं'। अभी तो नहलाया-धुलाया कुछ भी नहीं किया, वैसे का वैसा ही है। देखो, वह 'मैं' अपवित्र भी नहीं होता न! कसाई बना हुआ 'मैं', शुद्धात्मा बन जाता है। पहले वह कसाई था। यदि उसे पूछें कि तू कौन है? तो वह कहता है कि 'मैं कसाई हूँ।' ज्ञान के बाद में शुद्धात्मा बन जाता है। नहलाना-धुलाना वगैरह कुछ भी नहीं करना पड़ता जबकि लोग तो रोज-रोज़ नहाते हैं फिर भी कभी सुधरे नहीं।

उस 'मैं' पर सोचने योग्य है! कैसा है यह!
एवरीव्हेर एडजस्टेबल!

प्रश्नकर्ता : अतः जब आप ज्ञान देते हैं तब आप आरोपण छुड़वा देते हैं?

दादाश्री : तभी छूटेगा, नहीं तो छूटेगा नहीं न! फिर हम कहते हैं कि, 'अरे, आप शुद्धात्मा हो या चंदूभाई?' तब कहता है, 'नहीं, मैं शुद्धात्मा हूँ।' उस क्षण यदि पकड़े रखें कि 'नहीं, मैं चंदूभाई हूँ', तो हम जान जाएँगे कि आरोपण नहीं छूटा है लेकिन उस क्षण सभी कहते हैं कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ। दादा, अनंत जन्मों का आरोपण एक घंटे में छूट जाता है और वापस जहाँ था, उस मूल जगह पर आ जाता है, तो वह 'मैं' भी कितना फ्लेक्सिबल है न?

दादाश्री : 'मैं' तो एवरीव्हेर एडजस्टेबल है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन एक बार यदि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' में एडजस्ट हो जाए तो फिर वह नहीं हटता। फिर 'मैं' उसमें स्थिर हो जाता है।

दादाश्री : हो ही जाएगा न फिर।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह?

दादाश्री : मूल जगह पर बैठ गया है इसलिए हो ही जाएगा न! लोगों को भी मूल जगह पर बैठाना है लेकिन बैठ नहीं पाता न! कैसे बैठेगा? वह तो, जब सभी पाप भस्मीभूत हो जाते हैं तो फूल जैसे हल्के हो जाते हैं। जब पाप भस्मीभूत हो जाते हैं तब 'मैं' मूल जगह पर बैठ जाता है। वह तो, जब 'उसे' ठंडक होती है न, तब फिर कहता है, 'नहीं, यहीं पर रहूँगा।' अब नहीं छूटेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, जब आप ज्ञान देते हैं तब वह 'मैं'पन अलग हो जाता है लेकिन जो 'मैं'पन है वह, जागृति जितनी अधिक हो उसी अनुसार रहता है न या जागृति कम हो उस अनुसार रहता है? उसमें जागृति काम करती है क्या?

दादाश्री : जागृति ही है न! (भाव) निद्रा से 'मैं'पन का उपयोग उल्टी जगह पर होता है और जब जागृति आ जाती है तब उसका उपयोग सही जगह पर होता है, जागृति से।

अहंकार की शून्यता लाने के लिए 'ज्ञानी पुरुष' शुद्धात्मा का लक्ष (जागृति) बैठा देते हैं।

'मैं शुद्धात्मा हूँ', यह क्या?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह अहंकार ही बोल रहा है न? जो उल्टा चल रहा था वही अब ऐसा कहता है न कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'?

दादाश्री : 'मैं'! 'मैं' (जागृत आत्मा) ऐसा कहता है, अहंकार नहीं कहता। अहंकार तो अलग रहता है। अहंकार नहीं कहता। 'मैं', वह 'मैं' खुद का स्वरूप ही है। अब (मूल) स्वरूप खुद नहीं बोलता है लेकिन यह क्रिया उस तरफ की है। हम जिसे 'शुद्धात्मा' कहते हैं वह शुद्धात्मा खुद भी शब्द नहीं है, यह क्रिया उस तरफ घूम गई है अब। जैसे-जैसे 'आपकी' श्रद्धा बदलती है, बिलीफ बदलती है, वैसे-वैसे आवरण टूटते जाते हैं। आवरण तोड़ने वाली चीज़ है यह। लेकिन वह भान ही कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वही 'मैं' का अस्तित्व है। भान बदल गया। यदि अहंकार है तो काम ही नहीं आएगा न! वह चीज़ ही अलग है। अहंकार को लेना-देना नहीं है। अहंकार के विलय होने के बाद तो खुद का स्वरूप, 'वह' (भान) होता है। यह सब अंतरिम कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : खुद शुद्धात्मा की श्रद्धा में आ गया है और जब ऐसा भान हुआ कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तब पूरा अहम् जो कि विशेष भाव कर रहा था, वही खत्म हो गया न?

दादाश्री : हाँ, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा जो भान हुआ, उसी के लिए कहते हैं कि विशेष भाव खत्म हो गया।

प्रश्नकर्ता : तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह क्या है ?

दादाश्री : खुद के अस्तित्व का भान है ही लेकिन 'मैं कौन हूँ' वह भान हो गया, वह खुद का वस्तुत्व कहलाता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उस वस्तु को जान लिया कि 'खुद कौन है' और फिर जब पूर्णत्व हो जाता है तब 'मैं' भी चला जाता है।

'मैं शुद्धात्मा', बोलते ही निजरी अतःकरण

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ, यह देह नहीं हूँ' वह भी बुद्धि ही कहती है न?

दादाश्री : इसमें वह बुद्धि नहीं कहती है। बुद्धि ऐसा कहने ही नहीं देगी कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' अगर बुद्धि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' कहने दे तो उसका खुद का नाश हो जाएगा। उसका खुद का अस्तित्व खत्म हो जाएगा। अतः वह खुद इस पक्ष में बैठती ही नहीं है कभी भी। अगर वह 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलेगी तो मन-बुद्धि-चित और अहंकार का संपूर्ण अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा इसलिए मन भी ऐसा कुछ एक्सेप्ट नहीं करता (ज्ञान मिलने के बाद)। सभी समझते तो हैं लेकिन जब डिस्वार्ज का फोर्स आता है, तब वह एक्सेप्ट नहीं करता। बुद्धि तो हमेशा संसार के पक्ष में ही रहती है, कभी भी शुद्धात्मा के पक्ष में नहीं रहती। विरोधी पक्ष में रहती है।

प्रश्नकर्ता : प्रतिष्ठित आत्मा कहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'?

दादाश्री : वह नहीं कहता। आत्मा में से प्रज्ञा अलग हुई है, वह कहती है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और वह प्रतिष्ठित आत्मा को देखती है कि यह लट्टू क्या कर रहा है! शुद्धात्मा में रहकर देखती है वह।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा देखती है ?

दादाश्री : सारा काम अभी प्रज्ञा ही कर लेगी। जब तक मोक्ष में न चले जाएँ, जब तक यह सामान है, तब तक प्रज्ञा है। इस सामान के खत्म होते ही प्रज्ञा अंदर शुद्धात्मा में एकाकार हो ही जाएगी।

प्रश्नकर्ता : जब ऐसा कहते हैं कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो उसे भी प्रज्ञा ही देखती है ?

दादाश्री : बोलता है टेपरिकॉर्डर लेकिन भाव प्रज्ञा का है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या वह प्रज्ञा की सहज क्रिया है ?

दादाश्री : प्रज्ञा की सभी क्रियाएँ सहज ही होती हैं, स्वाभाविक।

सूक्ष्मतम अहंकार को हुआ शुद्धात्मानुभव

प्रश्नकर्ता : आत्मानुभव किसे होता है ? अनुभव करने वाला कौन है ?

दादाश्री : 'खुद' को ही होता है। अज्ञान से जो भ्रांति खड़ी हुई थी, वह चली जाती है और अस्तित्वपन वापस ठिकाने पर आ जाता है। 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा 'जिसे' भान था, उसे उसका वह भान मैं छुड़वा देता हूँ और उसी को

‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ का भान होता है। जो सूक्ष्मतम अहंकार है कि जिसका फोटो नहीं लिया जा सकता, जो आकाश जैसा है, उसे अनुभव होता है। ‘मैं चंदूभाई हूँ’, वह स्थूल अहंकार छूट गया, फिर सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और अंत में सूक्ष्मतम अहंकार रहता है। सूक्ष्मतम अहंकार को अनुभव होता है कि ‘मैं शुद्धात्मा हूँ।’ जो आज तक उल्टा चला था, वह वापस पलटता है। ‘इस’ ज्ञान के बाद में आपमें अब स्थूल अहंकार बचता है, जो कि निर्जिव है, सजीव भाग खिंच गया। स्थूल अहंकार का फोटो लिया जा सकता है। फिर बचता है सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम अहंकार जिसे अनुभव होता है। यह किसके जैसी बात है? बातचीत करते समय ‘डोजिंग’ हो जाए और वापस बातचीत करने लगे। इसमें ‘किसे डोजिंग हुआ और किसने जाना’ उसके जैसा है!

प्रश्नकर्ता : अनुभव प्राप्त करने वाला और अनुभव को देखने वाला, ये दोनों अलग हैं या एक ही हैं?

दादाश्री : दोनों एक ही हैं। एक वह जिसने देखा और एक वह जिसने प्राप्ति की दोनों एक ही हैं। यदि अहंकार को अनुभव नहीं होता तो वह कहता कि, ‘मुझे अनुभव नहीं हुआ है’ और अनुभव हो जाने पर वह प्रज्ञा को सत्ता सौंप देता है कि, ‘यह आपकी गद्दी।’ जिसने अनुभव प्राप्त किया और जिसने अनुभव को देखा, वे दोनों एक ही हैं!

शुद्धात्मा की दृष्टि से खत्म होता है अहंकार

प्रश्नकर्ता : जब ज्ञान होता है तभी अहंकार जाता है न?

दादाश्री : पहले ज्ञान नहीं होता, पहले

अहंकार जाता है। उसके बाद में ज्ञान होता है। अहंकार किससे जाता है? विराट स्वरूप के प्रताप से अहंकार चला जाता है।

यह आत्मज्ञान मिलने के बाद अब वह ‘खुद’ सम्यक् दृष्टि वाला बना है। पहले ‘खुद’ मिथ्या दृष्टि वाला था। जब ज्ञानी इन रोंग बिलीफों (मिथ्या दृष्टि) को फ्रैक्चर कर देते हैं, तब राइट बिलीफ बैठती है। राइट बिलीफ अर्थात् सम्यक् दर्शन। इसलिए फिर ऐसी बिलीफ बैठ जाती है कि ‘मैं चंदूभाई नहीं हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ।’

दोनों दृष्टियाँ अहंकार की ही हैं। पहले वाली जो रिलेटिव दृष्टि थी, वह दृश्य को देखती थी, भौतिक चीजों को, जबकि यह रियल दृष्टि चेतन वस्तु को देखती है। चेतन दृष्टा है और बाकी का सब दृश्य है। दृष्टा और ज्ञाता, दोनों चेतन के गुण हैं।

प्रश्नकर्ता : दृष्टि, वह तो दृष्टा का कार्य है न?

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो दृष्टि क्या है?

दादाश्री : दृष्टि तो अहंकार की है आत्मा की दृष्टि नहीं होती। आत्मा को तो सहज स्वभाव से भीतर दिखाई देता रहता है, भीतर झलकता है! खुद के अंदर ही सब झलकता है!

प्रश्नकर्ता : तो फिर इस आत्मा को जानने वाला कौन है? यह जो आत्मज्ञान होता है, वह किससे होता है?

दादाश्री : वह दृष्टि अहंकार को मिलती है। वह जो मिथ्या दृष्टि थी, उसके बजाय ‘इसमें’ ज्यादा सुख मिलता है इसलिए फिर वह अहंकार

धीरे-धीरे 'इसमें' विलय होता जाता है। अहंकार शुद्ध होते ही वह शुद्धात्मा में विलय हो जाता है, बस! जैसे कि, अगर शक्कर की गुड़िया को तेल में डाला जाए तो वह नहीं घुलती लेकिन अगर उसे पानी में डालें तो वह घुल जाती है। यह भी इसी तरह से है। अर्थात् शुद्धात्मा दृष्टि होते ही सब विलय होने लगता है। तब तक अहंकार है।

दृष्टि मूल जगह पर फिट हुई

'ज्ञानी पुरुष' सिर्फ इतना ही करते हैं कि जो दृष्टि जहाँ-तहाँ बाहर पड़ी हुई थी, उस दृष्टि को दृष्टा में डाल देते हैं। अर्थात् जब दृष्टि मूल जगह पर 'फिट' हो जाए, तभी मुक्ति होती है। और जो कुछ हद तक के ही दृश्यों को देख सकता था, वही सभी दृश्यों को पूरी तरह से देख और जान सकता है। 'ज्ञानी पुरुष' दृष्टि को दृष्टा में डाल देते हैं, तब 'आपको' पक्का पता चल जाता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' दृष्टि भी ऐसा बोलती है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' दोनों में अब जुदाई नहीं रही, ऐक्यभाव हो गया। पहले दृष्टि शुद्धात्मा को, खुद के स्वरूप को ढूँढ रही थी, लेकिन मिल नहीं रहा था। अब वह दृष्टि स्वभाव सम्मुख हो गई, इसलिए निराकुलता उत्पन्न होती है, वर्ना तब तक आकुल-व्याकुल रहता है।

हमने 'आपकी' 'दृष्टि' ही बदल दी। 'मैं चंदूभाई हूँ' और 'मैं इनका पति हूँ', वह सारी 'दृष्टि' चली गई और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' यही दर्शन दिया। यों दृष्टि बदल गई। पहले वाली दृष्टि बिगड़ी हुई थी इसलिए उल्टा ज्ञान हुआ था। यह 'दृष्टि' बदलती है, उससे फिर ज्ञान बदलता है और उससे चारित्र बदलता है।

ज्ञान देते हैं तो दूसरे ही दिन से 'यह मेरा नहीं है', ऐसा हो जाता है। ये जो क्रोध-मान-

माया-लोभ हैं, वे तो चंदूभाई के हैं! कार्यकारी नहीं हैं, वे निर्जीवता वाले हैं। अहंकार-वहंकार सबकुछ निर्जीव।

अतः 'वह' कहता है कि 'यह मेरा नहीं है, यह मेरा नहीं है, मैं शुद्धात्मा हूँ।' 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा कहता है न! पहले कहता था, कि 'मैं' ही चंदूभाई हूँ, अब वैसा नहीं है। तब कोई कहे कि 'चंदूभाई नहीं है?' तो वह चंदूभाई है जरूर लेकिन व्यवहार से कहलाते हैं। मात्र व्यवहार के लिए ही, वास्तव में 'मैं' चंदूभाई नहीं है! पूरी 'दृष्टि' ही बदल गई है।

शुद्धात्मा की प्रतीति

यहाँ ज्ञान देने के बाद दूसरे दिन से आत्मा की प्रतीति बैठ जाती है आपको।

प्रश्नकर्ता : प्रतीति का मतलब क्या है?

दादाश्री : कोई कहे कि 'यह मेरी स्त्री है।' तब कोई पूछे 'नहीं अभी तक समझ में नहीं आया।' तब कहता है, 'पत्नी है।' उसके शब्द तो हैं ही। उसे स्त्री शब्द से समझ में नहीं आया तो पत्नी कहता है तब समझ में आ जाता है न? तो प्रतीति अर्थात् दर्शन।

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा श्रद्धा में रहे तो वह प्रतीति कहलाएगी न?

दादाश्री : श्रद्धा उसे कहते हैं जो हट जाती है, विश्वास उठ जाता है। बैठी हुई श्रद्धा उठ जाती है, प्रतीति नहीं उठती।

प्रश्नकर्ता : तो यह दर्शन कहलाएगा?

दादाश्री : हाँ, दर्शन कहलाएगा। जो उठेगा नहीं।

प्रश्नकर्ता : दर्शन का मतलब क्या है?

दादाश्री : दर्शन अर्थात् जो समझ में फिट हो गया है।

प्रश्नकर्ता : अगर इस प्रतीति को दर्शन कहेंगे तो लक्ष किसमें समाएगा?

दादाश्री : लक्ष अर्थात् निरंतर ध्यान ही रहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' अतः अब जागृति उत्पन्न हो गई है।

शुद्धात्मा का लक्ष

कोई कहे 'भाई, आत्मा लक्ष में क्यों नहीं आता? तब कहते हैं, अलख है इसलिए जब ज्ञान से खुद का भान होता है तब लक्ष में आता है। आत्मा अदृश्य कहलाता है। अलख, कभी भी लक्ष में आ ही नहीं सकता कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' ऐसा लक्ष ही नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : उसे लक्ष में लाने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह तो इस ज्ञान से ही लक्ष में आएगा। बाकी, अलख तो उसका स्वभाव है। आत्मा ही परमात्मा है और अलख निरंजन है। लेकिन ऐसा कोई साधन नहीं, ऐसा कोई उपाय नहीं है जिससे कि आत्मा का लक्ष रहे। भगवान ने क्या कहा है कि, 'जो दुर्लक्ष है उसका लक्ष कभी भी नहीं रहता और जो लक्ष में है वह कभी भी दुर्लक्ष नहीं होगा।' इसीलिए आत्मा को 'अलख निरंजन' कहा गया है।

अब प्रतीति हो गई है। विश्वास हो गया है कि 'मैं चंदूभाई नहीं हूँ' परंतु 'मैं शुद्धात्मा ही हूँ।' ऐसी प्रतीति हो गई है और लक्ष आ गया है।

जिस समय लक्ष नहीं रहता, उस समय प्रतीति तो निरंतर रहती ही है। क्योंकि प्रतीति है

इसीलिए फिर से लक्ष आ जाता है, वरना लक्ष आए ही नहीं। एक बार खो जाए तो फिर याद करना पड़ेगा। यह तो अपने आप ही आकर खड़ा रहता है। रात को कभी जब जाग जाते हो, तब ऐसा याद आ जाता है न, कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'? हाँ। अर्थात् वह पूरी तरह से हो ही चुका है। अब आपको समझने की जरूरत है, यह साइन्स है। अतः एक-एक शब्द को समझने की जरूरत है।

जहाँ खुद नहीं है, वहाँ पर 'मैं हूँ' ऐसा बोलना, वही सब से बड़ा राग, वही जन्मदाता है। 'मैं चंदूलाल' वही राग है, यह राग टूटा तो सभी राग टूटे। जिसे 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' वह लक्ष है, उसके सभी राग टूट गए हैं और जिसे 'मैं आचार्य हूँ, मैं कलेक्टर हूँ' ऐसा भान है, उसके सभी राग खड़े हैं! ये तो ऐसे तंतीले हो गए हैं कि एक बात टेढ़ी कह दी हो तो आँखों में से ज़हर टपकने लगता है। वीतराग की बात को समझे नहीं हैं। 'मैं चंदूलाल हूँ' वह भान रहे, तो सभी राग उत्पन्न हो जाते हैं और शुद्धात्मा का भान होने के बाद जहाँ पर है, वहीं पर 'मैं हूँ', बोलता है, वह राग नहीं है, लेकिन वीतराग का लक्ष है। शुद्धात्मा वीतराग ही है, उसके लक्ष से 'बाहर' का सारा रिलेटिव शुद्ध होता जाता है। वीतराग कौन? 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह अथवा 'दादा' याद आएँ, तो वह भी वीतराग का लक्ष है। वीतराग कौन? ज्ञानी में जो प्रकट हुए हैं, वे संपूर्ण वीतराग हैं! और ज्ञानी ने दिया है वह लक्ष है, वह संपूर्ण वीतराग का लक्ष है। यह ग़ज़ब का पद आपको दिया है!

निर्विकल्पी देते हैं शुद्धात्मा का लक्ष

बाकी, जिसका कभी भी लक्ष न बैठता, उसे अलख निरंजन कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : कभी भी लक्ष ना बैठता ?

दादाश्री : कभी भी नहीं! यदि तू सिर फोड़ कर मर जाएगा तो भी लक्ष नहीं बैठेगा। भले ही शास्त्र पढ़ ले या शास्त्रों को घोलकर पी जा, तो भी तेरा लक्ष नहीं बैठेगा। क्योंकि जो खुद विकल्पी है, उसे निर्विकल्पी का लक्ष कैसे बैठेगा? चाहे कितनी भी मेहनत कर ले, उससे विकल्प जाएगा नहीं और निर्विकल्प होगा नहीं।

खुद विकल्पी है। निर्विकल्पी का लक्ष बैठ ही नहीं सकता। अतः जब कोई ज्ञानी पुरुष निर्विकल्पी हुए हों तब उनके द्वारा ही वह लक्ष बैठ सकता है। जाति स्वभाव से लक्ष बैठता है। जाति स्वभाव अर्थात् विकल्पी को निर्विकल्पी का लक्ष बैठ ही नहीं सकता। और यदि उन्हें निर्विकल्पी के लक्ष में लक्ष बैठ जाए न, तो उसे आत्मा का अनुभव कहा जाता है।

‘आप शुद्धात्मा हो’, वह लक्ष बैठ गया, अतः आपका यह विकल्प कि ‘चंदूभाई’ आप हो, वह खत्म हो गया। अब, चंदूभाई आपका नाम तो रहा लेकिन आप तो ‘रंजन’ वाले हो। अब, चंदूभाई नहीं रहे, अब रंजन आत्मरमणता है। पहले तो दिन-रात नश्वर चीजों में ही रमणता थी, अब, अविनाशी में रमणता हुई। जिनकी अविनाशी में रमणता है, उसके लिए मोक्ष हथेली में है।

चीजों में रुचि से चूक जाते हैं शुद्धात्मा दृष्टि

प्रश्नकर्ता : ‘शुद्धात्मा’ का लक्ष क्यों चूक जाते हैं ?

दादाश्री : दूसरी चीजों में ‘इन्टरेस्ट’ हो तो शुद्धात्मा का लक्ष्य चूक जाते हैं। हमें जिस चीज में रुचि हो तो वह चीज मिले बगैर तो रहेगी ही नहीं न! कढ़ी ढुल गई हो, तो भी शोर मचा देते

हैं। क्योंकि उसको उसमें ‘इन्टरेस्ट’ है। अंत में ये रुचियाँ ही निकाल देनी हैं। चीजें नहीं निकालनी हैं। चीजें निकालने से जाएँगी नहीं। पूरा जगत् चीजें निकालने के लिए माथापच्ची करता है। अरे, चीजें नहीं जाएँगी, वे तो नसीब में लिखी हुई हैं। चीजों के प्रति रुचि निकाल देनी है।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा का लक्ष हमेशा कैसे रह सकता है? उसकी लिंक टूट जाती है।

दादाश्री : जब अंदर लक्ष की लिंक टूट जाए तब हमें ऐसा बोलना होगा, ‘मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ या अनंत दर्शन वाला हूँ।’ ऐसा सब बोलेंगे तो लिंक फिट हो जाएगी। लिंक टूट जाती है, लिंक सारी पौद्गलिक हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा होता है क्या ?

दादाश्री : हाँ, वह तो हो सकता है। ऐसा सब तो बहुत बार हो जाता है और वह ज्ञेयस्वरूप है। ज्ञेय को देखने की लिंक टूट जाती है। ज्ञाता तो होता ही है, लेकिन यदि वह लिंक टूट जाए न, तो फिर हमारे बोलने से वह लिंक दोबारा शुरू हो जाती है।

लिंक टूट गई, ऐसा जो पता चलता है, उसका (तू) ज्ञाता है और लगातार रही है उसका भी ज्ञाता है। हम ज्ञाता स्वरूप ही हैं। टूटती हो तो भले ही टूटे, बस! हमें तो उसे जानना चाहिए।

लक्ष, वह अस्पष्ट अनुभव है

अलख निरंजन का लक्ष बैठ गया, सोने के बाद जब जागता है तब लक्ष हाज़िर रहता है, वही आत्मा का पहला अनुभव। और यदि कढ़ापो-अजंपो (बैचेनी, घबराहट) न हो तो भगवान बन गया।

शुद्धात्मा अलख निरंजन है, वह कभी भी लक्ष में नहीं आ सकता। यदि अपनी पत्नी को 'माँ' कहे तब भी उसका लक्ष नहीं बैठ सकता। कभी भी लक्ष न बैठ पाए, ऐसा जोखिम वाला है और यदि लक्ष आ जाए तो बाकी सभी से छूट जाएगा। क्योंकि सभी प्रकार की तृप्ति शुद्धात्मा में है। अतः सभी जगह से लक्ष उठकर अलख में समा जाता है। सभी प्रकार की तृप्ति शुद्धात्मा में है, ऐसा हमने देखा है, अनुभव किया है। लेकिन हमें यह देखना है कि तृप्ति कहाँ नहीं है, अभी भी लक्ष कहाँ चिपका हुआ है, वह देखते ही लक्ष वहाँ से छूटकर अलक्ष हो जाएगा और यदि पूर्ण रूप से लक्षाकार हो जाए तो अनुभव हो गया। जो लक्ष बैठा है, वह तो अनुभव है ही लेकिन पूर्ण रूप से लक्षाकार हो जाए, वही अनुभव है।

प्रश्नकर्ता : लक्ष और अनुभव में फर्क है?

दादाश्री : नहीं, यों फर्क नहीं है। लक्ष, वह छोटे प्रकार का अनुभव है। अनुभव, वह प्रत्यक्ष पाठ है। वह स्पष्ट अनुभव नहीं होता। अनुभव होता तो है लेकिन अस्पष्ट होता है। अनुभव के दो प्रकार हैं: अस्पष्ट और स्पष्ट। जिन्हें लक्ष बैठ गया हो, उन्हें आत्म अनुभवी पुरुष कहा जाता। लेकिन वे दूसरों के काम के नहीं हैं। यहाँ जो क्रमिक मार्ग में आत्म अनुभवी होते हैं, वे कई लोगों को उपदेश दे सकते हैं, जबकि अपने यहाँ इस मार्ग में आत्म अनुभवी दूसरों को उपदेश नहीं दे सकते। खुद, अपना ही कल्याण करते हैं। खुद की बात, खुद समझ जाते हैं पूरी ही, लेकिन दूसरों को समझाना नहीं आता। क्योंकि उन्हें उस वस्तु का परिचय नहीं है। राह चलते यह प्राप्त हुआ है। लेकिन वे खुद का कल्याण तो कर ही लेते हैं।

वह लक्ष बैठ जाने के बाद कल्पवृक्ष की आत्मशक्तियाँ बढ़ती जाती हैं, खिलती जाती हैं। और 'अकर्तापद', क्योंकि अब, खुद 'कर्ता' नहीं है। पहले तो कर्तापद था, अब अकर्तापद हुआ। उससे केवलज्ञान व दर्शन, वे दोनों प्रफुल्लित होते जाते हैं।

कर्ताभाव छूटते ही, बैठता शुद्धात्मा का लक्ष

कर्ताभाव छूटने से ही शुद्धात्मा का लक्ष बैठता है। आपको (महात्माओं को) शुद्धात्मा का पद क्यों दिया गया है? आप शुद्धात्मा और चंदूभाई जो कुछ भी करते हैं, आप उसके लिए रिस्पोन्सिबल (ज़िम्मेदार) नहीं हो, ऐसा विश्वास हो जाता है। अच्छा करो उसका भी दाग नहीं लगता और बुरा करो उसका भी दाग नहीं लगता। 'कर्तापद' ही मेरा नहीं है, उसे कहेंगे कि शुद्धात्मा का लक्ष बैठ गया।

जब हम 'ज्ञान' देते हैं तब तो पूछते हैं कि 'तू शुद्धात्मा है, एक्जेक्ट?' तब कहता है 'हाँ, एक्जेक्ट।' फिर भी यह क्या रहा? वह तेरा व्यवस्थित, साफ कह दिया न!

व्यवस्थित का अर्थ क्या है? 'चंदूभाई क्या करते हैं' वह आपको देखते ही रहना है, यह व्यवस्थित का अर्थ! फिर चंदूभाई ने किसी का नुकसान किया, दो लाख का, वह भी 'देखते' रहना है। 'हमें' उसमें नहीं पड़ना है कि ऐसा क्यों किया? 'हमें' प्रतिक्रमण भी नहीं करना है। यह तो, फिर इन सभी को समझ में नहीं आता इसलिए फिर प्रतिक्रमण सेट किया है कि 'चंदूभाई से प्रतिक्रमण करवाना।' व्यवस्थित अर्थात् जो है एक्जेक्ट वह तू देखता रह, वही अलग रहा!

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई को इस तरह से रहना

चाहिए कि किसी को भी किंचित्मात्र दुःख न हो, वह भाव रहना चाहिए।

दादाश्री : यदि वह भाव न रहे तो भी कोई ज़रूरत नहीं है। यह तो, मोक्ष का मतलब क्या कि कोई भाव ही नहीं। किसी में भी, पुद्गल में हाथ ही नहीं डालना, उसे व्यवस्थित कहेंगे। व्यवस्थित का एकज्जेक्ट अर्थ क्या है कि यह जो कुछ भी हो रहा है, उसमें तेरा कर्तापन नहीं है, तेरा कोई लेना-देना नहीं है। चाहे कैसा भी हो फिर भी! फिर भले ही 'चंदूभाई' भयंकर कृत्य करे, तो भी 'अब मेरा क्या होगा', ऐसा नहीं होना चाहिए। उसे भी 'देखते' ही रहना है, ऐसा व्यवस्थित दिया है। चंदूभाई को जो भी हुआ उसे देखते रहना है। फिर वह जो भी देखता है, वह दृश्य और खुद द्रष्टा। यह व्यवहार हमेशा चलता रहता है।

अब, आज्ञा में ही रहना है, और कुछ नहीं। हम क्या कहते हैं कि 'तू शुद्ध ही है', वह राइट बिलीफ और अब, आज्ञा में रहे, वह दूसरा, बस! उसका फल अपने आप आएगा!

निज स्वभाव का, अनुभव-लक्ष-प्रतीति

प्रश्नकर्ता : अपना कोई महात्मा कर्ताभाव में रहता ही नहीं न? चाहे किसी भी तरह से, अनजाने में भी कर्ताभाव में नहीं रहता। अनजाने में?

दादाश्री : जो इन पाँच आज्ञाओं का पालन करने के लिए तैयार है, थोड़ी बहुत पालन करता है, उसे किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं है। वह कर्ताभाव में रहता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादा, तो फिर अपने महात्माओं को किस श्रेणी में मानें? अनुभव, लक्ष और प्रतीति इन तीनों में मानना है क्या?

दादाश्री : इन तीनों से नीचे नहीं जा सकता, वह अपना अक्रम विज्ञान। (महात्माओं से) खुद शुद्धात्मा बन गए, अतः मोक्ष पक्का हो गया, इसमें दो मत नहीं हैं न! लेकिन स्वाद् कितना मिलता है? प्रतीति का। रात को जागने पर तुरंत ही आपको 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह अपने आप याद आ जाता है, उसे लक्ष बैठ कहेंगे। अतः 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उसकी हंड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत) प्रतीति बैठ गई और लक्ष बैठ गया। लक्ष अर्थात् जागृति। जो जागृति है न, अब वह बढ़ते-बढ़ते पूर्ण हो जाएगी और तीसरा, अनुभव होता है। उस अनुभव के आधार पर आप रोज सत्संग में आते हो। आपने कुछ चखा और मीठा लगा।

श्रीमद् राजचंद्र ने इसे क्या कहा है? परमार्थ समकित कहा है। अर्थात् क्षायक समकित कहा है।

कृपालुदेव ने आत्मसिद्धि में कहा, कि 'वर्ते निज स्वभावनुं, अनुभव, लक्ष अने प्रतीति।' तो आपको खुद के आत्मस्वभाव की प्रतीति रहती है और यह भी लक्ष में रहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और अनुभव सावधान करता है वह भी रहता है। ये तीनों शब्दों में बरतते हैं। 'वृत्ति वहे निजभावमां, परमार्थ समकित।' वृत्तियाँ जो पहले बाहर भटकना चाहती थीं, जो वृत्तियाँ अनादिकाल से बाहर जा रही थीं, 'ऐसा करूँ और वैसा करूँ।' आपकी उम्र के अन्य लोगों की वृत्तियाँ कहाँ जाती हैं? ठेठ फोर्ट (मुंबई) में जाकर, 'यह करें या वह करें, कुछ रुपये हाथ में आए हैं तो कुछ करें, फलाना धंधा करूँ या फलाना करूँ', ऐसा सब बंद हो गया है और वृत्तियाँ वापस खुद के स्वभाव में आने लगी हैं। वे वृत्तियाँ अब बाहर नहीं जातीं। सब वापस लौट आती हैं। बल्कि जो बाहर गई होंगी न, वे वापस आ जाती हैं। आपकी वापस आ रही हैं या नहीं? यदि वापस नहीं आएँगी तो

आपको चुभन होने लगेगी। यदि चिंता होने लगे तो समझना कि वापस नहीं आ रही हैं।

यह तो, चित्त वृत्तियाँ वापस लौटती हैं। जो भटकने के लिए बाहर जाती थीं, वे अब भटकेंगी नहीं। वे सारी चित्त वृत्तियाँ वापस लौटने लगी हैं। जैसे कि शाम होने पर सभी गाय-भैंसे वापस आ जाती हैं, उसी प्रकार से ये वापस आने लगी हैं। वे सुबह जाती हैं और शाम को वापस आती हैं। उसी प्रकार से अज्ञानता से चित्त वृत्तियाँ भटक रही थीं और फिर ज्ञान से भटकना बंद हो जाती हैं। संसार की विस्मृति जैसा अन्य कोई मोक्ष नहीं है। समय मिलते ही वृत्तियाँ बाहर जाने का प्रयत्न करती हैं। स्त्री की ओर जाती हैं, पुरुष की ओर जाती हैं, यहाँ-वहाँ जाती हैं। भटकती ही रहती हैं। और अब समय मिलने पर भी नहीं जातीं और अगर चली जाएँ तो वापस आ जाती हैं।

प्रश्नकर्ता : इसलिए फिर जो वृत्तियाँ आत्मा में हैं, वे फिर बाहर निकलती ही नहीं हैं?

दादाश्री : नहीं। बाहर निकलती हैं और अंदर आ जाती हैं, बाहर निकलती हैं और अंदर आ जाती हैं, ऐसा होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वापस अंदर आ जाती हैं।

दादाश्री : बिल्कुल भी बाहर नहीं निकलें, ऐसा तीर्थंकरों में है लेकिन हम वहाँ तक पहुँच सकते हैं जहाँ पर अंदर-बाहर दोनों ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : दादा ने यह जो ज्ञान दिया है, उसके आधार पर तो वृत्तियाँ चाहे कितनी भी बाहर जाएँ, लेकिन खिंचकर वापस आ जाती हैं न?

दादाश्री : वे तो आती हैं और वापस बाहर

चली जाती हैं, वे वापस आ जाती हैं लेकिन यहीं के यहीं, इतने में ही रहती हैं, यह अपनी बाउन्ड्री और बाउन्ड्री में ही रहती हैं। यदि बाहर व्यापार में चली गई हों, तो वे वापस आ जाती हैं।

यह जागृति रहे न, दूसरा कुछ भी नहीं। जागृति और दादाजी का मुखारविंद याद आ जाए तो कहा जाएगा कि उस घड़ी वापस आत्मा में आ गए, याद आया कि वापस घुसा अपने घर में!

वे वृत्तियाँ बाहर क्या करने जाती हैं? वे बाहर भटक रही थीं तो वे सुख के लिए बाहर भटक रही थीं। वे हर कहीं भटक-भटककर सुख ढूँढ रही हैं। सभी वृत्तियाँ सुख ढूँढती हैं। तो कहीं भी उसे सुख नहीं मिला, लेकिन यहाँ पर तो साफ, नकद मिलता है, फिर बाहर क्यों भटकें?

प्रतीति-दर्शन, लक्ष-जागृति, अनुभव-ज्ञान

हर एक चीज़ का नियम ऐसा है कि पहले हमें प्रतीति होती है कि 'यह करेक्ट है।' वर्तन में नहीं आता। प्रतीति होने के बहुत समय बाद वर्तन में आता है। यह जो पढ़ते हैं तो पढ़ने में भी पहले प्रतीति होती है उसके बाद में धीरे-धीरे अनुभव होता जाता है और फिर वर्तन में आता जाता है। मोक्ष अर्थात् सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र। पूरा संसार मिथ्या ज्ञान-दर्शन व चारित्र है।

अनुभव, लक्ष और प्रतीति। प्रतीति का समावेश दर्शन में होता है। लक्ष का जागृति में। लक्ष अर्थात् जागृति। और जो प्रतीति हुई है, वह अनुभव में आ जाए तो, उसी को 'ज्ञान होना' कहते हैं। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह दर्शन है, और जब उसका अनुभव होता है तो वह ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : हम 'आत्मा का ज्ञान' कहते

हैं और फिर 'आत्मा का अनुभव' कहते हैं, तो आत्मा के अनुभव और आत्मा के ज्ञान में क्या अंतर है ?

दादाश्री : आत्मा का ज्ञान संपूर्ण कहलाता है और एक-एक अंश करके जो होता है वह अनुभव कहलाता है। अंश ज्ञान को अनुभव कहा गया है और सर्वांश ज्ञान को ज्ञान कहा गया है। एक-एक अंश बढ़ते-बढ़ते संपूर्ण अनुभव हो जाता है।

आत्मा का अनुभव : तप व चारित्र

प्रश्नकर्ता : अब यह जो अनुभव है, क्या उसे चारित्र कहा जाएगा ?

दादाश्री : नहीं, चारित्र नहीं, अनुभव उसे कहते हैं कि जो 'प्रतीति' पक्की हुई है कि यह सही है, जैसे-जैसे वह अनुभव पक्का होता जाएगा वैसे-वैसे ज्ञान तैयार होता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा कब कहा जाएगा कि चारित्र में आ गया ?

दादाश्री : वह तो जब ज्ञान और दर्शन का फल आया तब चारित्र कहलाएगा। जितने प्रमाण (मात्रा) में अनुभव, उतने ही प्रमाण में वीतरागता और उतना ही चारित्र कहा जाएगा। तप के बिना चारित्र नहीं है। जितना तप करोगे, उतना ही चारित्र उत्पन्न होगा। तप को देखना और जानना, वही चारित्र है।

प्रश्नकर्ता : तो अभी दर्शन में आने के बाद उसे समझ में आ गया और उसे ज्ञान में यह पक्का हो गया कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', तो...

दादाश्री : उसे अनुभव होना कहते हैं। जितना अनुभव होता है, उतना ही उसे अंश ज्ञान

होता है, इस प्रकार फिर सर्वांश ज्ञान होता है और दर्शन तो सर्वांश ही दिया हुआ है। केवलदर्शन दिया है लेकिन जितना ज्ञान होता है उतना ही चारित्र में बर्तता है। तो जैसे-जैसे ज्ञान में आता जाएगा वैसे-वैसे फिर चारित्र बढ़ता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा कह सकते हैं कि अनुभव के समय अंश ज्ञान परिणामित हुआ ?

दादाश्री : जितना अनुभव हुआ, उतना ही ज्ञान में आया, ऐसा कहा जाएगा। अनुभव में नहीं आया तो उसे ज्ञान नहीं कहेंगे।

प्रश्नकर्ता : तो जितना अनुभव में आया उतने अंशों तक चारित्र में आया ही न ?

दादाश्री : फिर चारित्र में आया। यहाँ पर जब ज्ञान देते हैं, तभी से दर्शन तो है ही। अब जैसे-जैसे अनुभव होता जाएगा, वही ज्ञान है। फिर रोज सत्संग में बैठते हो न, तो ज्ञानी दशा के सभी पर्याय पूर्ण हो जाएँगे। अनुभव और दर्शन दोनों का गुणा होने पर चारित्र में आता है। दर्शन प्रकट होने के बाद जैसे-जैसे ज्ञान परिणामित होगा, वैसे-वैसे चारित्र उत्पन्न होगा अर्थात् जब ज्ञान और दर्शन का फल आया वैसे-वैसे अब भीतर चारित्र आता जाएगा। जितना तप करोगे उतना ही चारित्र उत्पन्न होगा! जब-जब चारित्र उत्पन्न होता है इसका मतलब तप पूर्ण हो चुका है। तप का मौका आए और तप न हो पाए तो वह चारित्र को बाहर रख देगा, खत्म कर देगा। तप होना वह भाग चारित्र में आता है। जितनी-जितनी बातों में तप हुआ, उसी को चारित्र कहते हैं। तप पूर्ण होने के बाद ही चारित्र आता है।

क्रमिक मार्ग में ज्ञान के अनुसार, ज्ञान के अनुभव से प्रतीति प्राप्त होती है। हमारे लिए इस

अक्रम मार्ग में प्रतीति के अनुसार जितना अनुभव होता है, उतना ही ज्ञान प्रकट होता है। जो प्रतीति हुई है, उसका अनुभव में आना, उसी को ज्ञान होना कहते हैं।

शुद्धात्मा का पौधा यों बढ़ता है

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद भी ऐसा अनुभव होना कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह थोड़ा कठिन है।

दादाश्री : नहीं, वह होना चाहिए। रखना नहीं पड़ता, अपने आप ही रहता है। उसके लिए क्या करना पड़ता है? उसके लिए मेरे पास (सत्संग में) आना-जाना पड़ेगा और जो पानी डालना चाहिए, वह नहीं डलता है, इसलिए यह सब कठिन हो जाता है। यदि आप व्यापार में ध्यान नहीं दोगे तो व्यापार का क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : डाउन (कम) हो जाएगा।

दादाश्री : हाँ, यह भी वैसा ही है। ज्ञान ले लिया, उसके बाद पानी डालना पड़ेगा तभी पौधा बढ़ेगा। छोटा पौधा हो न, उसमें भी पानी डालना पड़ता है। तो आपको भी महीने-दो महीने में ज़रा पानी डालना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : घर पर डालते हैं (सत्संग करते हैं)।

दादाश्री : नहीं, घर पर डालो, वह नहीं चलेगा। ऐसा चलता होगा? रूबरू ज्ञानी यहाँ पर आए हुए हों और हमें उनकी वैल्यू (कीमत) ही नहीं! स्कूल में गए थे या नहीं गए? कितने साल तक गए थे?

प्रश्नकर्ता : दस साल।

दादाश्री : तब उसमें क्या सीखा? भाषा!

इस अंग्रेजी भाषा के लिए दस साल निकाले, तो यहाँ मेरे पास तो छः महीने ही कहता हूँ। यदि छः महीने मेरे पीछे घूमे न (सत्संग में आए) तो काम हो जाएगा।

वह किताब-विताब पढ़ते हो, चरणविधि की?

प्रश्नकर्ता : हाँ, पूरी पढ़ता हूँ।

दादाश्री : पढ़ना, उतना ही करने की ज़रूरत है। बाकी, इन सभी लोगों में शुद्धात्मा देखना! बहुत अच्छा रहेगा। यह तो बेस्ट वे, (उत्तम रास्ता) है।

प्रश्नकर्ता : अब, रोज़ जो चरणविधि है, नमस्कार विधि है, वह पढ़ता हूँ।

दादाश्री : हाँ, लेकिन यदि आज्ञा पालन करोगे न, तो बहुत अच्छा रहेगा। आज्ञा उसकी बाड़ है, वर्ना, यह सब तो सड़ जाएगा।

समकित द्वारा क्षायक की तरफ

'मैं शुद्धात्मा हूँ' का लक्ष बैठना, उसे भगवान ने सब से बड़ी चीज़ कहा है। वहाँ क्रमिक मार्ग में तो शब्द से प्रतीति होती है। उसकी भी बहुत कीमत है। शुद्धात्मा के जो गुण हैं, उन गुणों पर प्रतीति बैठ जाए कि 'यह मैं हूँ,' तो उसकी बहुत बड़ी कीमत मानी है, उसे समकित कहा है। वह प्रतीति भी सिर्फ शब्द से और आपको तो 'वस्तु' की प्रतीति हुई है, वह स्वाभाविक प्रतीति है यानी क्षायक प्रतीति कहलाती है! यह ज्ञान बहुत काम करे, ऐसा है।

जैसे-जैसे जागृति बढ़ती जाती है, जैसे-जैसे उपशम हो चुके गुण क्षय होते जाते हैं। इस जागृति का फायदा उठाना है। बाहर के जो कर्म

उपशम हो गए हों, वे सामायिक करने से क्षय हो जाते हैं लेकिन फिर भी जब तक 'टेस्टेड' नहीं हो जाए, तब तक कुछ नहीं होगा। जीवन में 'टेस्टिंग इग्जामिनेशन' आना चाहिए।

बाकी, जागृति तो वह है कि यह दिखे, वह दिखे, सबकुछ दिखे। पूरे दिन ये 'दादा' ही याद रहा करें। 'मैं शुद्धात्मा हूँ'-यह सब 'दादा' के कारण ही है। यह कृपा का फल कहलाता है। जबकि यह जागृति अलग चीज़ है।

बाकी, इसमें जल्दबाज़ी करने जैसा नहीं है। जो ज्ञान आपने पाया है न, वह लाख जन्मों में भी किसी को प्राप्त नहीं हो सकता। यह तो जल्दी से मिल गया है इसलिए उतावला हो जाता है। यह 'लाइन' उतावला होने की है ही नहीं। यह तो स्थिरता की 'लाइन' है!

सामान्य भाव से देखने पर वीतराग

शुद्धात्मा भाव से देखते-देखते चलें तो वह सामान्य भाव कहलाता है। इससे सभी आत्माओं के दर्शन होते हैं, इससे वीतरागता रहती है। यहाँ से गाड़ी में जाएँ न, तो दो प्रकार के दर्शन हैं। एक है सामान्य भाव से दर्शन, उसे दर्शन कहते हैं और विशेषभाव से दर्शन को ज्ञान कहते हैं। विशेष भाव से दर्शन का मतलब क्या है? यह नीम है, यह आम है, इसे विशेष भाव कहते हैं और सामान्य भाव से देखना दर्शन कहलाता है। सामान्य भाव में सभी जीव आ जाते हैं। सभी जीवों को शुद्धात्मा भाव से दर्शन करते हैं। विशेष भाव में तो सभी जीव रह जाएँगे और नीम और आम बस इतना ही देख पाएँगे। अर्थात् विशेष भाव के बजाय सामान्य भाव अच्छा है। विशेष भाव में नहीं पड़ना है, लेकिन अगर कोई चारा ही न हो वहाँ पर, सामने अगर नगीनदास सेठ आ रहे हों

तो वापस विशेष भाव में आना पड़ेगा न? चारा ही नहीं है न! है न? और अगर कोई पूछे कि यहाँ पर आम हैं या नहीं? तब फिर हमें दिखाना पड़ेगा न? लेकिन अनिच्छा से! हमें जान-बूझकर इस चीज़ में नहीं पड़ना है कि यह आम है और यह नीम! अरे भाई, अनंत जन्मों से यही किया है न, और क्या किया है तूने? किसका बेटा नीम और किसका बेटा आम अब ये सारी झंझट क्यों? हमें अपने आम खाने हैं, खाओ न चुपचाप!

हम वकील ढूँढने निकलते हैं तब उसके बाल देखते हैं या उसकी वकालत देखते हैं? हाँ, यहाँ पर अगर काले चश्मे पहनकर आए तब तो उस चश्मे से हमें क्या? हमें यही देखना है कि उसमें वकालत का गुण है या नहीं? उसी तरह हमें आत्मा देखने हैं।

ज्ञानी पुरुष यों जा रहे हों, तब वे ऐसा नहीं देखते हैं कि यह स्त्री है या यह पुरुष है या फिर यह मोटा है, यह पतला है अथवा लूला है या लंगड़ा है, ऐसा सब नहीं देखते हैं। तो फिर वे 'क्या देखते हैं?' सामान्य भाव से आत्मा ही देखते हैं।

विशेष भाव नहीं रखते। विशेष भाव वाला क्या करता है? 'देखो न लंगड़ा है!' ऐसा करने से आगे का देखना रुक जाता है। एक ही देखा और लाभ एक का ही मिला और सौ लोगों का लाभ गया। विशेष भाव किया। अतः हम सबकुछ सामान्य भाव से देखते हैं। अभी जो विशेष ज्ञान है, वह बुद्धि में जाता है और बुद्धि के साथ हमेशा अहंकार होता ही है। सामान्य ज्ञान अर्थात् सभी में शुद्धात्मा 'देखते' रहना। विशेष परिणाम को नहीं देखते कि ये अक्रलमंद हैं और ये बेअक्रल हैं और ये मूर्ख हैं और ये गधे हैं, ऐसी झंझट में हम कहाँ पड़ें।

प्रश्नकर्ता : इसीलिए आप वह अभ्यास करने को कहते हैं न कि एक घंटे हर एक को शुद्धात्मा रूप से देखने का अभ्यास करना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, जितना-जितना अभ्यास करेंगे न तो उससे फिर विशेष परिणाम खत्म हो जाएँगे। विशेष परिणाम से अभिप्राय उत्पन्न होते हैं, यह अंधा है और यह लूला है। वह तो पुद्गल की बाज़ी है।

चाहिए ज्ञान व समझ भूल रहित की

आत्मा जानने के लिए तो सिर्फ बात को समझना है। करना कुछ भी नहीं है। एक व्यक्ति ने भगवान से पूछा कि, 'मेरा मोक्ष कब होगा?' तब भगवान ने कहा कि, 'आपकी समझ भूल रहित होगी तब आपका मोक्ष होगा।' बोलो अब भगवान ने इसमें क्या गलत कहा?

प्रश्नकर्ता : ठीक कहा।

दादाश्री : फिर वापस उसने भगवान से पूछा कि, 'जप-तप करते हैं, उसका क्या?' तब भगवान ने कहा कि, 'वह तो जिस दिन तुझे अजीर्ण हो गया हो, उस दिन उपवास करना। जप-तप की हमारी शर्त नहीं है। तेरा ज्ञान और समझ किसी भी तरह से भूल रहित कर, उतना ही हमें चाहिए।' अभी आपकी कितनी सारी भूलें हैं? 'मैं चंदूलाल हूँ, इस स्त्री का पति हूँ, इस बच्चे का बाप हूँ।' कितनी सारी भूलें.... भूलों की परंपरा ही है! मूल में ही भूल है, वहाँ क्या हो सकता है? एक संख्या विनाशी है और एक संख्या अविनाशी है। अब इन दोनों को गुणा करने जाएँ, तब तो विनाशी रकम नष्ट हो जाएगी। यानी गुणाकार कभी भी होगा नहीं और जवाब आएगा नहीं। शुक्रवार बदलेगा नहीं और शनिवार होगा

नहीं। 'एवरी डे फ्रायडे' और 'फ्रायडे' ही रहता है! लोग भूलभूलैया में चले गए हैं! भूल से तो अपना संसार भी अच्छा नहीं हो सकता तो मोक्ष तो किस तरह होगा? वास्तव में तो तू स्वयं ही मोक्षस्वरूप है। तू ही परमात्मा है, मात्र भूल रहित ज्ञान और भूल रहित समझ का ही भान होना चाहिए। आप शुद्धात्मा तो हो ही, परन्तु उसका भान होना चाहिए।

सावधान, वर्ना अभी भी भटकोगे कलियुग में

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा होने के बाद उसे दबाव क्यों घेर लेते होंगे?

दादाश्री : यह जो शुद्धात्मा प्राप्त हुआ है, वह आपके सभी कर्मों के निकाल करने के बाद प्राप्त हो तो कुछ भी अंदर पैटेगा नहीं। यह तो आपके बिना खपाए हुए कर्म अभी मौजूद है और यह प्राप्त हो गया है। मैं क्या कहता हूँ कि ऐसा प्राप्त होने के बाद इन कर्मों का निकाल कर दो झटपट। यह सब उधार चुका दो, नहीं तो आत्मा, शुद्धात्मा प्राप्त हुए बिना उधार चुक सके ऐसा कोई रास्ता था ही नहीं, यानी यह तो दिवालिया में से साहूकार होना है, यह उधार बहुत सारा है। और अब यदि भटक गए न, तो 81,000 वर्षों तक भटकेंगे। इसलिए हम अभी उठा लेते हैं, तो जिस-जिसको यह योग प्राप्त हो जाए, वे सब लोग काम निकाल लें, नहीं तो स्लिप होने का काल है, फिसलने वाला काल है। आपके उधार अपार है, उनके बीच आपको जागृत कर दिया। आपको जागृति बरतती है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बरतती है।

दादाश्री : उस जागृति के उच्चतम शिखर पर बैठकर देखना चाहिए, अंदर कुछ भी हिल

जाए तो पता चल जाएगा कि अंदर क्या हिला? और वह अपने हित में है या अपना विरोधी है, वह तुरंत समझ जाना चाहिए।

पूरा जगत् खुली आँखों से सो रहा है, क्योंकि वह किसमें जागृत है? पैसों में, विषय में जागृत है। पूरा जगत् ताल बैठा-बैठाकर थक गया है, कुछ भी नहीं हो पाया। इसलिए मैं आपको क्या कहता हूँ कि सबकुछ 'व्यवस्थित' है, यानी कि आपका हिसाब है। उसे कोई बदल नहीं सकता। इसीलिए मेल बैठाने मत जाना। आप अपना काम करते रहो। 'व्यवस्थित' आपको सभी तरह की सहायता देता रहेगा।

अब माया दूर रहनी चाहिए। माया घुसनी नहीं चाहिए। यह तो छोटी-छोटी चीजें देकर, आपको अजगर की तरह निगल जाती है। जब कोई बड़ी घटना हो जाए, तभी आप शुद्धात्मा में जाते हो! यानी सभी चीजों में जागृती रहनी चाहिए। इसमें भूल हो जाए, तो वह नहीं चलेगा।

दादा की स्व-पर दृष्टि

प्रश्नकर्ता : आत्मा और पुद्गल का जो डिमार्केशन है न, जिस तरह से आपको अलग लगता है, उस तरह से हमें ऐसा कैसे लगेगा कि आत्मा अलग है?

दादाश्री : अलग ही है न!

प्रश्नकर्ता : है! लेकिन आप जिस तरह से देख सकते हैं, आत्मा अलग और पुद्गल अलग, वैसा हम भी देख सकेंगे क्या?

दादाश्री : वह स्टेशन आएगा, तब देख पाओगे न!

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह का होता है?

दादाश्री : कोई तरीका नहीं होता। यह आत्मा और यह पुद्गल, ये दोनों सटे हुए ही हैं, लेकिन संग नहीं है दोनों का।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह जो अभी आप बैठे हुए हैं और दादा भगवान 'दादा' को देख रहे हैं, वे ऐसा किस तरह से देखते हैं?

दादाश्री : स्व-पर की दृष्टि से। स्व की दृष्टि और पर की दृष्टि से। मैंने आपको जो आत्मा दिया है, उसकी (स्व)(जागृति की) दृष्टि अलग और इसकी (पर) (बुद्धि की) दृष्टि अलग। ये जो रूम दिखाई देते हैं, यह दृष्टि अलग है, यह 'पर' की दृष्टि कहलाती है और वह आत्मा वाली, 'स्व' की दृष्टि है। 'स्व' दृष्टि अलग है। 'स्व' और 'पर' दोनों अलग दिखाई देते हैं। यह 'पर' और यह 'स्व,' आप भी समझते हो न, लेकिन आपको गहरे उतरने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन आपको तो समझ में आता है न कि 'भाई, यह सारा अलग है।' आपको पता नहीं चलता कि यह 'पर' है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो पता चलता है।

दादाश्री : वही दृष्टि। यह मैं नहीं हूँ और यह हूँ, यह मैं नहीं हूँ और यह हूँ। इसी को मज़बूत कर लो! ये सारी रोड अगर कच्ची हो और फिर आगे की रोड बनाने जाएँगे तो पहले वाली कच्ची पड़ जाएगी और अगर यह रोड मज़बूत है न, जहाँ तक दिखाई दे, वहाँ तक उसे मज़बूत हो जाने दो अच्छी तरह। यह तो, सारे काम नियम से ही करता है। आपको उस सारी झंझट में नहीं उतरना है। वर्ना जैसा यहाँ (संसार) पर था, वैसा ही दखल डालने वाला बन जाएगा? वहाँ (ज्ञान में) दखल डालने की ज़रूरत ही नहीं है। आप तो आज्ञा में रहो। आज्ञा से बाहर निकलना भयंकर

गुनाह है। यह तो, पहले की जो आदतें पड़ चुकी हैं न, वे सारी हेबिट (आदते) परेशान करती हैं। बाकी, पाँच आज्ञा का ही पालन करना है। और कोई दखल नहीं करनी है। आपको पता चलता है न, कि यह 'पर' है, यह 'स्व' नहीं है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा वह तो पता चल जाता है।

दादाश्री : दुनिया के लोग इसे नहीं समझ सकते।

अक्रम में मिली 'आज्ञा', उन्हें सँभालना

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह ज्ञान है?

दादाश्री : नहीं! वह ज्ञान तो विज्ञान कहलाता है। ज्ञान तो यह शब्दों में लिखा हुआ है। जिसे करना पड़ता है, उसे ज्ञान कहते हैं और जिसे करना नहीं पड़ता, अपने आप सहज ही होता रहता है, वह विज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : सहज भाव से आत्मा की दशा के लिए ध्यान में बैठना है या नहीं?

दादाश्री : सहज भाव उसी को कहा जाता है कि जब नींद में से जागो तब कुछ भी प्रयत्न किए बगैर आपको 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का ध्यान आ जाए। आपको अपने आप ऐसा ध्यान आता है?

प्रश्नकर्ता : आता है।

दादाश्री : उसी को सहज कहते हैं और बाकी का सब असहज कहलाता है। यह सहज कहलाता है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' अपने आप ही आता है और अन्य जगह पर गुरु महाराज मंत्र स्मरण देते हैं। वह याद आए या न भी आए। उसके लिए प्रयत्न करना पड़ता है, जबकि यह तो आपको सहज हो चुका है। आपका सहजात्मस्वरूप हो

चुका है। आपका आत्मा सहज हो गया है, अब देह को सहज करना है। इन पाँच आज्ञा का पालन करने से वह सहज हो सकता है। दोनों सहज हो जाएँगे, उसे मोक्ष कहेंगे।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप कहते हो कि आज्ञा बहुत सीधी है, सरल है, वह बात ठीक है लेकिन पहली और दूसरी आज्ञा में निरंतर रहना, वह क्या सरल है?

दादाश्री : रहने वालों के लिए हर्ज नहीं है लेकिन ऐसा है न, उपवास करके देखना, रह पाते हो या नहीं?

प्रश्नकर्ता : वह समझ में नहीं आया दादा।

दादाश्री : दिन भर उपवास करके देखना, रह पाते हो या नहीं? क्योंकि यह तो खुराक मिली कि डोजिंग होने लगा।

हम आपसे सिर्फ, इतना ही कहते हैं कि यह विज्ञान किसी भी जन्म में नहीं मिला और अभी मिला है तो सँभालना। यह अक्रम है और एक घंटे में आत्मज्ञान प्राप्त कर ले, ऐसा है। ऐसा कि कभी भी अशांति नहीं होगी, निरंतर समाधि में रहना हो तो रह सकते हो। खाते-पीते, बैठते-उठते, पत्नी के साथ रहते हुए भी रहा जा सकता है। यदि नहीं रह पाते हो तो मुझसे पूछो कि कहाँ पर दिक्कत होती है, तो मैं बतलाऊँगा कि इस पोइन्ट को दबाना। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा बोलने की जरूरत नहीं है। रिलेटिव और रियल देखते रहना है।

ज्ञान-दृष्टि से खुद भगवान

ज्ञान तो दृष्टि है। यह चमड़े की आँखों की दृष्टि है और दूसरी ज्ञानदृष्टि है, उससे देखना आ गया तो काम निकल जाएगा न! ये चमड़े

की आँखें नहीं हैं? इनसे तो ऐसा दिखता है कि 'ये मेरे ससुर हैं, ये मेरे मामा हैं, ये फूफा हैं।' ये सभी बातें सच होंगी? ये सभी बातें करेक्ट हैं? कोई हमेशा के लिए ससुर रहता है कहीं? जब तक डायवोर्स नहीं लिया हो तब तक ससुर, डायवोर्स ले उसके दूसरे दिन से ही वह संबंध खत्म हो जाता है न! अर्थात् ये सभी टेम्पेरी एडजस्टमेन्ट्स हैं! बाकी, दृष्टि तो 'ज्ञानी पुरुष' बदल देते हैं।

प्रश्नकर्ता : दृष्टि को बहिर्मुख से अंतर्मुख कर देते हैं।

दादाश्री : नहीं। वैसी अंतर्मुख दृष्टि नहीं। अभी तो आपकी दृष्टि अंदर वाली भी है ही। लेकिन आपकी दृष्टि बदल देते हैं, तो फिर बाहर भी आत्मा दिखता है। जैसा अंदर है, वैसा बाहर भी आत्मा नहीं है? लेकिन आपकी वह दृष्टि बदल देते हैं! बाकी हमें तो एक मिनट के लिए भी यह संसार याद नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : हमसे एक मिनट भी संसार भूला नहीं जाता।

दादाश्री : यानी कि पूरी डिजाइन में ही फर्क है। पूरी दृष्टि में ही फर्क है, और कुछ भी नहीं। आप यह देख रहे हो, मैं दूसरी तरफ ऐसे देख रहा हूँ। पूरी दृष्टि ही अलग है। इसमें और कुछ भी प्रयत्न नहीं करना है। यदि कोई दृष्टि बदल दे न तो आपको भी सब वैसा ही दिखेगा फिर!

दृष्टि एक बार बदलने के बाद, वह दृष्टि खिलती जाती है, और वैसे-वैसे 'खुद' 'भगवान' होता जाता है।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा और महात्मा में क्या फर्क है?

दादाश्री : शुद्धात्मा तो भगवान हैं। महात्मा तो, औरों से ज़रा टॉप पर हो तो उसे महात्मा कहा जाता है। यह तो हम व्यवहार से महात्मा कहते हैं लेकिन है तो शुद्धात्मा। शुद्धात्मा तो भगवान हैं लेकिन वे भगवान अभी आप में प्रतीति के रूप में ही प्रकट हुए हैं। वह प्रतीति जब पूर्ण हो जाएगी, तब संपूर्ण अनुभव दशा आएगी। अभी प्रतीति-लक्ष और अनुभव कम-ज्यादा होते रहते हैं लेकिन जब संपूर्ण अनुभव रहेगा, जब सभी के साथ अभेदता का अनुभव होगा, तब वह शुद्धात्मा बन सकेगा। शुद्धात्मा ही परमात्मा है।

शुद्धात्मा पद से बने 'वीतद्वेष'

इस जीव को किस का बंधन है? अज्ञान का। तो छूटे कैसे? जिससे बंधा है, उसके प्रतिपक्षी से, यानी कि ज्ञान से।

'मैं चंदूलाल हूँ' उसी आरोपित जगह पर राग है और अन्य जगह पर द्वेष है। अर्थात् स्वरूप के प्रति द्वेष है। एक ओर राग हो तो उसके प्रतिपक्ष के लिए, दूसरे कोने के प्रति द्वेष होगा ही। हम स्वरूप का भान करवाते हैं, शुद्धात्मा का लक्ष बैठा देते हैं, तब उसी क्षण से वह 'वीतद्वेष' होता है और ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों वीतराग होता जाता है। वीतराग यानी मूल जगह का, स्वरूप का ज्ञान-दर्शन। हम आपको संपूर्ण केवलज्ञान और केवलदर्शन प्रदान करते हैं। इसलिए आपको संपूर्ण केवलदर्शन उत्पन्न होता है और केवलज्ञान, तीन सौ साठ डिग्री का, पूर्ण रूप से पचता नहीं है, काल की वज्रह से। अरे! हमें ही चार डिग्री का अजीर्ण हुआ न? हम देते हैं तीन सौ साठ डिग्री का केवलज्ञान, पर वह आपको पचेगा नहीं। अतः आप अंश केवलज्ञानी कहलाते हो। 'भ्रांति से भ्रांति को काटना', ऐसा क्रमिक मार्ग में कहा है। जैसे

कपड़ा मैला हो तो उसका मैल निकालने के लिए साबुन चाहिए। अब वह साबुन अपना मैल छोड़ता जाता है। उस साबुन का मैल निकालने के लिए फिर टीनोपॉल चाहिए। टीनोपॉल साबुन का मैल निकालता है पर अपना मैल छोड़ता जाता है। ऐसे अंत तक जिन-जिन साधनों को उपयोग में लाएँ, वे अपना मैल छोड़ते जाते हैं। निर्मल कभी भी नहीं हो पाता। वह तो निर्मल, ऐसे ज्ञानी पुरुष की भेंट हो, तभी निर्मल होता है। ज्ञानी पुरुष जो संपूर्ण निर्मल हुए हैं, शुद्ध हुए हैं, वही आपके प्रत्येक परमाणु को अलग करके, आपके पापों को भस्मीभूत करके, केवल शुद्धात्मा आपके हाथों में रखें, तब अंत आता है। तभी मोक्ष होता है। वर्ना अनंत जन्म, कपड़ा धोते रहें और जिसके साबुन से धोया उसी का मैल लगता जाता है।

ज्ञानी के माध्यम से होता है ग्रहण, शुद्धात्मा

मनुष्य देह के अलावा और कोई ऐसी देह नहीं है, कि जो मोक्ष की अधिकारी हो। मनुष्य देह मिले और मोक्ष के संयोग मिलें, साधन मिलें तो काम हो जाए।

शुद्ध संयोग मिले तभी मोक्ष होता है। ज्ञानी पुरुष का सत्संग ही एकमात्र शुद्ध संयोग है। क्योंकि ज्ञानी पुरुष के लिए क्या लिखा गया है ?

*‘शुद्धात्मा मूळ उपादानी, अहं-ममतना अपादानी।
मूळ निमित्त शुद्ध संयोगी, छोड़ाव्यो भव संसारे,
वंदु कृपाळु ज्ञानी ने...’*

ज्ञानी पुरुष ही एक ऐसा संयोग हैं, मूल निमित्त हैं जो कि ‘शुद्धात्मा’ का उपादान करवाते हैं और अहंकार और ममता का, ‘मैं’ और ‘मेरा’ का अपादान करवाते हैं। दूसरे शब्दों में ‘शुद्धात्मा’ ग्रहण करवाते हैं और अहंकार और ममता का त्याग

करवाते हैं। इसलिए उन्हें ‘मूल निमित्त’ और मोक्ष प्राप्ति के एकमात्र ‘शुद्ध संयोगी’ कहा गया है।

जबकि आत्मा और संयोगों का तो ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध है। आत्मा को तो सब से संयोग संबंध मात्र ही है। ‘शुद्धात्मा’ खुद असंयोगी है और उसके अलावा, सभी संयोग संबंध है। संयोग-वियोग तो ज्ञेय हैं और ‘तू खुद’ ज्ञाता है पर ज्ञाता ज्ञेयाकार हो जाता है इसलिए तो अनंत जन्मों से भटका है। पाँच करण से जो दिखते हैं, अनुभव में आता हैं, वे स्थूल संयोग और अंतःकरण के सूक्ष्म संयोग और वाणी के संयोग, उन सारे संयोगों के साथ आत्मा का मात्र ‘संयोग संबंध’ है, सगाई (रिश्ते का) संबंध नहीं है। ज्ञाता-ज्ञेय का, ‘संयोग संबंध’ मात्र है। यदि केवल ज्ञाता-ज्ञेय के ‘संयोग संबंध’ में ही रहें तो वह अबंध ही है।

‘वस्तुत्व’ का सिद्धांत

‘ज्ञानी पुरुष’ तो भान करवाएँगे कि ‘संसार’ से ‘तू’ चिपका हुआ है। वर्ना कोई वस्तु ‘तुझे’ स्पर्श नहीं कर सकती। तब वह कहेगा, ‘मुझे कोई जरूरत नहीं है?’ तब हम कहते हैं, ‘नहीं, तुझे कोई जरूरत ही नहीं है। तुझे जगत् में अवलंबन की जरूरत ही नहीं है।’ उसके बाद ‘वह’ भान में आ जाए न, तब वह कहेगा, ‘मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ।’ फिर अंदर चिंता-घबराहट कुछ भी नहीं रहती। चिंता-घबराहट, वह सब तो ‘परवस्तु’ में होता है और ‘खुद’ सिर पर ले लेता है कि ‘मुझे ऐसा हो रहा है।’ अरे, यह ‘तेरा’ नहीं है और यह सब दूसरे के घर में हो रहा है। ‘तुझे’ कहाँ कुछ हो रहा है? हो रहा है पड़ोसी के घर, वहाँ हमें क्या? और ‘आत्मा’ को तो कुछ होगा ही नहीं न? लेकिन यह तो अनादि की भ्रांति ‘उसे’ यह सारी बात भुलवा देती है।

शुद्धात्मा न दिखाई दे, वह प्रमाद

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ', कब बोल सकते हैं ?

दादाश्री : यह ज्ञान सहित अंदर परिवर्तन होता रहता है, वह हमें समझ में आता हो और ज्ञानी पुरुष द्वारा दिया हुआ लक्ष खुद को बैठा हो। और लक्ष बैठने के बाद फिर उसे भूल नहीं सकते। रात में जागने पर अपने आप आ जाता है। अतः उसे भूल नहीं सकते, वह कभी भी नहीं जाता। एक बार वह चीज़ हाज़िर हो गई उसके बाद गैरहाज़िर नहीं होती, वैसा ही इस अलख निरंजन का है।

आपको शुद्धात्मा का लक्ष बैठ गया है न? बस, अपने स्वरूप का लक्ष, वह निज स्वरूप का लक्ष, वह अलख भगवान है, अलख निरंजन!

वह लक्ष अलख निरंजन का लक्ष कहलाता है। अब, हमारे पाँच वाक्यों में ही, पाँच आज्ञा में ही रहना है और वह कुछ कठिन नहीं है। अब चूकना मत। बार-बार ऐसा अवसर नहीं मिलेगा। अब साक्षात्कार हो गया है, सबकुछ हो ही चुका है। अब, भगवान आपके पास से नहीं जाएँगे। अब, चिंता वगैरह कुछ भी नहीं होती न? भीतर ठंडक रहती है न? हाँ, अभी तो वह ठंडक और बढ़ेगी और अभी तो यदि दो ही घंटे पढ़ोगे न तो आठ घंटे का फल मिलेगा। इतना उच्च प्रकार का दर्शन हो जाएगा।

यहाँ सत्संग में बैठकर जो कुछ परिवर्तन हुआ लगता है वह विस्तार से समझ लेना चाहिए, और वही पुरुषार्थ है। ज्ञान पोइन्ट टु पोइन्ट धीरे-धीरे समझ लेना चाहिए। सत्संग करते हुए सब से आसान रास्ता यह है कि दादा को राज़ी रखना।

यदि 'हमारा' संग नहीं मिले तो हमारे वाक्यों का संग, वह सारा सत्संग ही है। सत्संग यानी शुद्धात्मा के रिलेटिव का संग, अन्य किसी का संग रखने जैसा नहीं है, फिर भले ही वह साधु हो, सन्यासी हो या कोई भी हो। हमें तो भीतर माल देख लेना है, फिर बाकी कुछ भी आँखों को छूने दें, ऐसा नहीं है। गाय-भैंस में भी शुद्धात्मा है, इसका विश्वास हो जाने के बाद दिखने ही चाहिए न? फिर यदि नहीं दिखें तो वह प्रमाद कहलाएगा।

यह सरल मार्ग तो शायद ही कभी मिल पाता है। यदि पुण्य का प्रताप बहुत हो तो मिलता है। तब फिर वहाँ पर प्रमाद करने का कोई अर्थ ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : प्रमाद नहीं करना है।

दादाश्री : हाँ, वह तो चिपक ही गया। बार-बार ऐसा अवसर नहीं मिलता। शुद्धात्मा कभी भी लक्ष में नहीं बैठता। वह अलख निरंजन है। किसी को लक्ष बैठा ही नहीं और यदि लक्ष बैठ जाए तो काम हुए बगैर रहता ही नहीं।

शुद्धात्मा के भान से हुआ, सर्वभाव से असंग

प्रश्नकर्ता : श्रीमद् जी कहते हैं, 'सर्व भाव से असंगपन होना, वह सब से दुष्कर साधन है।'

दादाश्री : अब, आप सर्व भाव से असंग हो चुके हो। आप को कोई भी भाव नहीं रहा। जहाँ भाव होता है, वहाँ अभाव होता है। सिर्फ भाव नहीं होता। भाव अर्थात् राग और अभाव अर्थात् द्वेष। आपको किसी चीज़ के भाव-अभाव हैं? यदि आप चंदूभाई हो तो भाव आएगा लेकिन आप शुद्धात्मा बन गए तो फिर भाव रहा ही

कहाँ? स्वभाव। यह भाव तो विभाव है, विशेष भाव। सर्व भाव से असंगपन वह सब से दुष्कर साधन है। लेकिन अब आप सब से दुष्कर साधन करके बैठ चुके हो, ऐसा आपको नहीं लगता? मन, बुद्धि कबूल करती है फिर आपको क्या हर्ज है? अपने देश की पार्लियामेंट मंजूर करती है। फिर अब, इससे ज़्यादा क्या?

अब, आपको तो असंग ही बना दिया है। उसके बाद भी आप वापस उसे छूकर आ जाते हो। उसे छूने की क्या ज़रूरत है? फिर भी आपको कर्म नहीं बंधेंगे, ऐसा यह विज्ञान है। वापस छूकर आओ तो आपको उलझन होगी सिर्फ इतना ही, उतने टाइम आपका सुख चला जाएगा, उतना ही, बाकी आपको और कोई परेशानी नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : उसे छूकर आ जाते हैं उससे सुख चला जाता है।

दादाश्री : हाँ! लेकिन जो बुरी आदत पड़ चुकी है न, अब वह जाती नहीं न! उसका प्रतिक्रमण करना। कहना, 'चंदूभाई प्रतिक्रमण करो।' यह तो बहुत अच्छा व सरल मार्ग है! यानी कि मोक्ष हाथ में आ गया है!

आप तो भगवान महावीर जैसे बन गए हो। यदि आपको रहना आ जाए तो आप महावीर ही हो। आपको तो निर्लेप, असंग, महावीर जैसा बना दिया है। लेकिन रहना आना चाहिए। यदि इतनी अच्छी चीज़ प्राप्त करने के बाद उसका उपयोग करना नहीं आए तो अपना ही ओवरवाइज़पन है।

अनुभव पूर्ण होने पर होगा, अव्याबाध का अनुभव

यह ज्ञान मिलने के बाद मनुष्य श्रेणियों की

शुरुआत कर सकता है। वर्ना, श्रेणियों की शुरुआत ही नहीं कर सकता! 'मैं शुद्धात्मा हूँ', कहा तो उतना उसका एक पैर इस पूरे संसार समुद्र में नीचे टिका। समुद्र में एक पैर नीचे टिक पाया। तो हम शुद्धात्मा, ज्ञान के लक्ष वाले। ये जो बाहर शुद्धात्मा बोलते हैं, उनका पैर नीचे नहीं टिका है। यह तो, पूरे संसार समुद्र में किसी भी जगह पैर टिका ही नहीं। उतनी गहराई में जा ही नहीं पाए। जहाँ पैर नीचे टिकाने जाएँ, वहाँ पानी, पानी और पानी। अब, यह पैर नीचे टिक गया है। श्रेणी की शुरुआत हो गई है। पैर टिक जाने पर थके हुए हों तब भी मन में तसल्ली रहती है। एक पैर पर खड़े रहते हैं उसके बाद दूसरा पैर धीरे-धीरे उठाकर सेट करते हैं लेकिन एक सेट होना चाहिए। तो यह पैर सेट हो चुका है अर्थात् पुरुषार्थ शुरू हो गया। वर्ना, पुरुषार्थ खुद के हाथ में है ही नहीं न! यदि थक गया तो डूबे बगैर कोई चारा नहीं लेकिन यह समुद्र तो डुबा देगा। परंतु यह संसार रूपी समुद्र नहीं डुबाता। भाई, यदि बेहद थकान लगे तो भी नहीं डुबाता। हम कहें, 'डूब जाऊँगा?' तब कहता है, 'नहीं, डूब नहीं मरोगे, थके हुए ही घूमते रहो।' तो यह एक पैर नीचे रखा कि फिर श्रेणी की शुरुआत करता है। श्रेणी अर्थात् अनुभव के सारे स्टेपिंग। पहला अनुभव, दूसरा अनुभव, तीसरा अनुभव यों करते-करते जब आत्मा के अव्याबाध स्वरूप का अनुभव, हमें जैसा अव्याबाध स्वरूप का अनुभव हुआ है, वैसा ही होगा तब वह अनुभव सर्व श्रेष्ठ कहा जाएगा। इस काल में जहाँ तक पहुँच सकते हैं, वहाँ तक का अनुभव हुआ, ऐसा कहा जाएगा, अव्याबाध स्वरूप का। सूक्ष्म भाव की अनुभव श्रेणी कब पूर्ण होगी? जब, 'मैं अव्याबाध स्वरूप हूँ', ऐसा हो जाएगा, तब।

जब से, मैं शुद्धात्मा हूँ, ऐसा लक्ष में बैठ गया, तब से अनुभव श्रेणी शुरू हो जाती है। कोई जंतु पैर के नीचे कुचल जाए तो 'उसे' शंका होती है, निःशंकाता नहीं रह सकती। अतः तब तक 'आपको' 'चंदूलाल' से प्रतिक्रमण करवाना पड़ेगा कि 'चंदूलाल, आपने जंतु को कुचला, इसलिए प्रतिक्रमण करो।' ऐसे करते-करते सूक्ष्म भाव की अनुभव श्रेणी प्राप्त होगी और खुद का स्वरूप अव्याबाध स्वरूप है, ऐसा लगेगा, दिखेगा और अनुभव में आएगा। उसके बाद शंका नहीं होगी। तब तक तो जप आत्मा, तप आत्मा, त्याग आत्मा, सत्य आत्मा में रहता है, वह शुद्धात्मा में नहीं है। उसे श्रेणी नहीं कहते। अर्थात् वह व्यक्ति मोक्ष में जाएगा या कहीं और जाएगा, यह कहा नहीं जा सकता। शुद्धात्मा का लक्ष बैठने के बाद में श्रेणियों की शुरूआत होती है, उसके बाद खुद का स्वरूप अव्याबाध है, सूक्ष्म है, अमूर्त है, ऐसा अनुभव में आता जाता है।

'लक्ष' के प्रति पुरुषार्थ

अपने लक्ष में रहना चाहिए। 'इस तारीख को मुंबई जाना है', वह अपने लक्ष में रहता है। उसी तरह से 'हमें मोक्ष में जाना है', वह लक्ष में रहना चाहिए। कहाँ जाना है वह यदि लक्ष में नहीं रहा तो वह किस काम का? मुंबई जाना है, वह लक्ष में रहता है न, या भूल जाते हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं भूलते।

दादाश्री : वैसा ही यह भी लक्ष में रहना चाहिए। हम तो अब उस तरफ जाने को निकले हैं। चाहे जल्दी आए, देर से आए लेकिन उस तरफ चल पड़े। जितना जोर करे उतना अपने बाप का। दादा मिले हैं तो प्लेन की तरह चलेगा,

वर्ना, सूक्ष्म दादा होंगे तब भी ट्रेन की तरह तो चलेंगे ही। यदि खुद रूबरू मिले हों तो प्लेन की तरह चलेंगा जबकि वह ट्रेन की तरह चलेगा। तो जितना प्लेन से जाया जाए उतना अच्छा।

प्रश्नकर्ता : सभी प्लेन वाले ही ढूँढते हैं।

दादाश्री : हाँ।

शुद्धात्मा का लक्ष पहुँचाता है महाविदेह क्षेत्र

जिसे यहाँ 'शुद्धात्मा' का लक्ष (जागृति) बैठ गया है, वह यहाँ पर भरत क्षेत्र में रह ही नहीं सकता। जिसे आत्मा का लक्ष बैठ गया है, वह महाविदेह क्षेत्र में पहुँच ही जाता है, ऐसा नियम है! यहाँ इस दुष्काल में रह ही नहीं सकता। जिसे शुद्धात्मा का लक्ष बैठा, वह महाविदेह क्षेत्र में एक या दो जन्म लेकर तीर्थंकर के दर्शन करके मोक्ष में चला जाता है, ऐसा आसान और सरल मार्ग है यह! हमारी आज्ञा में रहना। आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप और समभाव से निकाल (निपटारा) करना पड़ता है। ये सभी जो आज्ञाएँ बताई हैं, इनमें जितना रह पाए उतना तू रह। संपूर्ण रूप से तो भगवान महावीर की तरह ही रह पाएगा! आप रियल और रिलेटिव देखते-देखते जाते हो तो आपका चित्त दूसरी जगह नहीं जाता।

'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा निर्णय होना, उसे ही कहेंगे आत्मा का अनुभव है। और ऐसा आत्मअनुभव होना, वह क्या कोई ऐसी-वैसी बात है? हमने आपको जो 'शुद्धात्मा' दिया है, वह 'फर्स्ट स्टेप' है। उससे आगे तो बहुत कुछ है। बाद में शुद्धात्मा का स्वरूप, उसके गुण सहित प्रकट होगा!

-जय सच्चिदानंद

सत्संग प्राप्ति के डिजिटल माध्यम

AKonnect App : Android और iPhone mobile में AKonnect App द्वारा आपको सत्संग अपडेट्स, पूज्यश्री के अपडेट्स, लोकल सेन्टर के अपडेट्स तथा MMHT, WMHT, PMHT, GNC, MBA वगैरह ग्रुप के अपडेट्स और सूचनाएँ नियमित रूप पर दी जाती है। इसके अलावा Today's Energizer, आप्तसूत्र, वेबसाइट, वॉलपेपर वगैरह के अपडेट्स भी दिए जाते हैं। - AKonnect app-<https://akonnect.org/app>

Dadabhagwan App : Android और iPhone mobile में Dadabhagwan App द्वारा सत्संग शेड्यूल, पुस्तकें, ओडियो - वीडियो सत्संग, मैगजीन, फोटो गैलरी, सत्संग सेन्टर की सूचना और साधना मोड्युल द्वारा विविध सत्संग से संबंधित सूचनाएँ और सामग्री उपलब्ध है।

Dadabhagwan app - <https://www.dadabhagwan.org/app>

dadabhagwan.tv : इस वेबसाइट द्वारा दिन में 24 घंटों नॉन स्टॉप सत्संग प्रसारित होते रहते हैं। आप किसी भी समय इस app पर सत्संग सुन सकते हैं। <https://www.dadabhagwan.tv>

Youtube Channel : दादा भगवान फाउन्डेशन की Youtube Channel पर मुमुक्षु और महात्माओं के लिए उपयोगी कई वीडियो रखे गए हैं और नियमित रूप से नए-नए वीडियो अपलोड किए जाते हैं। आप अपडेट्स प्राप्ति के लिए इस Channel को subscribe कर सकते हो।

Youtube - <https://www.youtube.com/user/dadabhagwan>

उपरोक्त दोनों mobile app, टी.वी. के वेबसाइट और Youtube Channel पूज्यश्री के जो सत्संग लाइव वेबकास्ट होने होते हैं, वे सत्संग उसी समय लाइव देखे जा सकते हैं।

dadabhagwan.fm : इस वेबसाइट द्वारा आप दिन भर नॉन स्टॉप ओडियो सत्संग सुन सकते हैं। आप इस वेबसाइट पर जाकर विविध मोड्युल के बारे में जानकारी प्राप्त करके विविध सत्संग, भक्ति पद, ज्ञानवाणी, सामायिक से संबंधित सत्संग, आरती वगैरह सुन सकते हैं। - <https://www.dadabhagwan.fm>

विशेष निवेदन

कोरोना वायरस महामारी की वर्तमान परिस्थिति में पूज्यश्री दीपकभाई की निश्रा में सभी कार्यक्रम तथा आप्तपुत्रों-आप्तपुत्रीओं के विविध सेन्टरो में आयोजित सभी कार्यक्रम विलंबित किए गए है। भविष्य में परिस्थिति सामान्य होने के बाद सरकार द्वारा धार्मिक कार्यक्रमों के लिए अनुमति देने के बाद कार्यक्रम आयोजित होंगे।

'दादावाणी' के वार्षिक / 15 साल के सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा ? आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के अंतिम छः अंक की जांच करें। DGFT555/08-28 यानी आपकी सदस्यता अगस्त-2028 को समाप्त हो रही है।

त्रिभंजरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9328661188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687 अन्य सेन्ट्रों के संपर्क : अहमदाबाद : (079) 27540408, मुंबई : 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा : +1 877-505-DADA (3232), यु.के. : +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया : +61 421127947



पूज्य नीरू माँ/ पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर



भारत

- 'दूरदर्शन'-नेशनल पर हर रोज सुबह 7 से 7-30
- 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर हर रोज रात 10 से 11 (हिन्दी में)
- 'दूरदर्शन'- उत्तरप्रदेश पर हर रोज सुबह 7 से 8 (हिन्दी में)
- 'उड़ीसा प्लस' टी.वी. पर हर रोज सुबह 7.30 से 8 (हिन्दी में)
- 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 तथा सोम से शुक्र शाम 5-30 से 6 (मराठी में)
- 'दूरदर्शन'-चंदना पर सोम से शुक्र सुबह 11-30 से 12 (कन्नड़ में)
- 'दूरदर्शन'-गिरनार हररोज पर सुबह 7 से 7-30 दोपहर 2 से 2-30 रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज सुबह 3.30 से 4.30, दोपहर 2.30 से 3, रात को 8 से 9

USA - Canada

- 'TVAsia' - पर हर रोज सुबह 7.30 से 8 EST
- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 7 से 7.30 और 8 से 8.30 EST (हिन्दी में)

UK

- 'वीनस' टी.वी. पर हर रोज सुबह 8 से 9 GMT
- 'MA TV' पर हर रोज शाम 5.30 से 6.30 GMT
- 'MA TV' हर रोज रात 9.30 से 10.30 GMT (हिन्दी में)
- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 7 से 7.30 Western European Time (6 से 6.30 am GMT)

Australia

- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji-NZ-Singapore-SA-UAE

- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Australia

- 'आस्था' पर सोम से शुक्र रात को 10 से 10.30 (डिश टी.वी. चैनल यू.के.-849, यू.एस.ए.-719)

'शुद्धात्मा' रूप कब हो सकेंगे ?

एक व्यक्ति मुझ से पूछ रहा था, "दादा, मुझे पूरा दिन, 'शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान रहता है लेकिन मैं उस रूप हो नहीं पाता हूँ अभी"। अरे, उस रूप होने को कहाँ कोशिश कर रहा है ? अभी तो तुझे प्रतीति हुई है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। प्रतीति होने से क्या हुआ कि अंदर जो बीज थे, वे सब जल गए। अब बीज फिर से नए सिरे से उगने लायक नहीं रहे लेकिन अब पिछले बीजों का निवेड़ा तो आना चाहिए न। तो पिछले बीज अब फल देकर जाएँगे। जितने फल देकर चले जाएँगे उतना अनुभव ज्ञान प्रकट होगा। अनुभव ज्ञान कब प्रकट होता है ? जब उसके पास ऐसा अनुभव ज्ञान हो कि कड़वे-मीठे फल आने पर उनमें समता रहे। अनुभव ज्ञान प्रकट होने के बाद मैं वर्तन में आएगा तब तू पूर्ण रूप से शुद्धात्मा बन जाएगा।

- दादाश्री

